http://www.epitomejournals.com, Vol. 2, Issue 12, December 2016, ISSN: 2395-6968

Epitome : International Journal of Multidisciplinary Research

ISSN : 2395-6968

सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में महानगरीय नारी चित्रण

प्रा. तडवी सैराज अन्वर,

संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय,

सोयगांव, जि. औरंगाबाद.

Email. sairajtadavi@gmail.com

Abstract

हिंदी साहित्य में कहानी विधा एक प्राचीन विधा है | कहानी में मनुष्य जीवन की सूक्ष्मातीसूक्ष्म अभिव्यक्ती कहानी में होती रही है | कहानी साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन रहा है | कहानी निर्माण में पिछे हर युग में अलग उद्देश्य रहा है | समय के अनुसार कहानी में अनेक विषयों को लेकर कहानी की रचना होने लगी | प्राचीन समय में कहानी एक मनोरंजन का साधन रही है | लेकिन समय के साथ साथ कहानी के स्वरुप और क्षेत्र ने अपने पैर पसारे | वर्तमान समय में मनुष्य जीवन से संबंधित अनेक यथार्थ घटनाओं का चित्रण कहानी साहित्य में किया जाने लगा है |

Keywords : सुधा अरोड़ा, कथा साहित्य, महानगरीय, नारी, समाज

Research Paper

नारी का प्राचीन समय से महत्वपुर्ण स्थान रहा है | नारी के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती | वास्तव में नर की अपेक्षा वह अधिक सन्माननीय और अधिक श्रध्देया रही है | नारी अपनी शक्ति के बल पर प्रगति और सभी क्षेत्रों में वर्चस्व स्थापित करती रही हैं | नारी समाज, घर, परिवार को एक सूत्र में बांधकर उसकी उन्नति के लिए हमेशा त्याग करती रही है | नारी को इसिलीए सूत्रधारिणी, जगदम्बिका, जगतजननी कहा जाता है | परिवर्तन प्रकृती का नियम है | नारी का जीवन भी परिवर्तन शील रहा है | नारी को प्राचीन समय में समाज में पूरा आदर प्राप्त था, प्राचीन वैदिक काल में नारी के श्रेष्ठता और नेतृत्व के प्रमाण मिलते है |लेकिन समय के साथ - साथ नारी की स्थिति में भी परिवर्तन होता दिखाई देता है | समाज व्यवस्था में उसको द्वितीय समजा ने लगा | एक समय जिस समाज नारी को देवी मानकर उसकी पूजा होती थीं, वही समाज उसी नारी को भोग विलास का साधन मानकर उसका शारिरीक और मानसिक शोषण कर रहा है | स्वतंत्रता के

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

बाद नारी के अनेक नये रुप उभरकर सामने आये है | जिसका परिणाम नारी जीवन पर हुआ है | स्वतंत्रता के बाद साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं का एक बड़ा दल उभरकर सामने आया था, इनमें सुधा अराड़ा जी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है | सुधा अरोड़ा जी ने अपने कथा साहित्य में नारी को केंद्र बिंदु स्थान में रखा है | भारतीय समाज में प्रत्येक कालखंण्ड में नारी की स्थिति विवादास्पद रही है | साहित्य में प्राचीन समय से नारी को लेकर लिखा भी जाता रहा है | नारी को प्रतिष्ठा दिलाने का प्रयास भी होता रहा है | नारी के प्रगति के लिए सामाजिक आन्दोलन भी होते रहे है | लेकिन वर्तमान समय में भी नारी की स्थिति के परिदृष्ट्य निरशाजनक ही नजर आता है |

सुधा अरोड़ाजी ने अपनी कहानियों में तथा अनेक महिला संगठनों से जुडकर नारी की स्थिति को लेकर कार्य करती रही है | नारी जीवन का यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों, में किया है | वर्तमान समय में नारी अपने अस्तित्व मूल्य, अर्थ, मातृत्व, मोहभंग, मान- सम्मान, प्राचीनसडी-गली रुढियों परंपराओं से जूझती दिखाई देती है | महानगरीय जीवन में कामकाजी नारी का जो यथार्थ चित्रण सुधा अरोड़ा जी ने किया है उसमें नारी मजबुरी के कारण अनेक समस्याओं का सामना वर्तमान समय में भी करता पड रहा है, इसमें अर्थ महत्वपूर्ण समस्या रही है |

> ‘‘क्षनिक आवेश में नोकरी छोड देने का का निर्णय चित्रा ने दिवाकर को काफी जोश के साथ सुनाया था, लेकिन ममता का ज्वर उतर .जाने पर वह दोनों की सम्मिलित आय में से अपने साठे चारसौ रुपये घटाकर किसी चमत्कारी मासिक बजट तक पहुचने की कोशिश में सफल नही हो पाई थी | हर बार महानगर का अर्थशास्त्र उसे मात दे जाता था |’’ (१)

वर्तमान समय में बाजारवाद में नारी यंत्र के समान जीवन जी रही है जिसमे वह घूटन महसूस कर रही है | जानकीनामा, महानगर की मैथिली, रहोगीतुम वही, अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिठ्ठी, यह रास्ता उसी अस्पताल को जाता है, बोलो भ्रष्टाचार की जय, दहलीज पर संवाद जैसी कहानियों नारी यंत्र के समान जीवन जी रही है और घूटन महसूस कर रही है |

> ‘‘वहाँ का हर इंसान दतनरा संतुष्टसुखी और अवकाश प्राप्त दिखाई देता था कि अपनी बम्बई की भाग दौड बाली मशीनी जिदंगी असे कहीं भीतर से तोड़ती हुई महसूस होती थी |’’ (२)

नारी अपने आपको भीतर से घुटन भरी महसूस कर रही है जिसे सुधा अरोड़ा जी ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है | नारी समाज में अपनी जिम्मेदारी निभाती रही है, और अपने अधिकारे के प्रति संघर्ष करती रही है लेकिन भ्रष्ट्र प्रशासन भ्रष्टाचार के कारण उसे अनेक समस्याओं का सामना करता पडता है जिसका चित्रण सुधा अरोड़ो जी के बोलो भ्रष्टाचार की जय इस कहानी में प्रस्तुत किया है |

> ‘‘मैंने अपने बॉस मिस्टर बी. के. मानिहर के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना चाहा था और उसकी बड़ी महँगी किमत मुझे चुकानी पड़ी थी |’’ (३)

भ्रष्टाचार बहुत बड़ी समस्या उभरकर सामने आयी है जिसका प्रभाव नरारी जीवन पर भी पड़ा है |

आधुनिकता के कारण नारी के सामाजिक पारिवारी जीवन में असंतुलन का निर्माण हुआ है | मनुष्य दिनोंदिन प्रगती कर रहा है लेकिन नारी को अपना व्यक्तित्व, अस्तिव खतरे में नजर आने लगा है | नारी का शारिरीक और मानसिक शोषण तो होता ही आया है लेकिन आस्तिव भी खत्म होने लगा है | सुधा अरोड़ाजी ने नारी को आपने अस्तित्व के प्रति चेतना जगाने का कार्य

> ‘‘जब खाना खाने में किसी को शर्म नहीं आती तो लाने में कैसी शर्म| एक दो बार खुद खरोदकर लाओं तो पता भी चजे कि सब्जी - भाजी के भाव कहॉ जा रहे है | अब खाती मेरी कमाई से तो घर में छतीस पकवान बनन से रहे | भगवान का शुक्र है कि दो वक्त की रोटी जुट जाती है, किसी के आगे हाथ पसारने नही पढ़ते वरना तुमने तो उसके लिए भी काई कसर बाकी नहीं छोड़ी.....| ’’ (४)

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

नारी घर, परिवार के जिम्मेदारी निभाने के साथ साथ अपने जीवन के प्रति भी सोचने लगी है |

महानगरीय जीवन में असंवेदनशीलता बढ़ती ही जा रही है | परिवार के सदस्यों को एक दूसरे के प्रति लगाव कम होने लगा है | आत्मियता मान - सम्मान मूल्य संस्कृति खत्म होने लगा है | सुधा अरोड़ा जी ने युध्दविराम इस कहानी के माध्यम से मनुष्य के अंदर की इन्सानियत कैसे खत्म हो रही है इसका यथार्थ चित्रण किया है | मॉ के मरने के बाद बेटे, बहुए लडकी , दामाद इनके लिए भी आधुनिक महानगरीय जीवन में समय को कमी महसूस कर रहे है | सिर्फ अर्थ हो महत्व दिया जा रहा है |

> ‘‘कल जीजी के साथ ही हम लोक भी वापस चले जाएँगे | वे समझ नहीं पाए थे कि क्या कहें | उन्होंने इतनी मौतें देखी थी , सब जगह तेरह दिन लोग बैठते थे, कीर्तन - पाठ होता था, तेरहवें दिन ब्राम्हण-भोज होता था | और यह चार दिनों में तेरह दिन के क्रिया - कर्म खत्म कर लेना |’’ (५)

आधुनिकरण के तमाम दावों के बीच नारी के सामाजिक स्थिति में परिवर्तन नही आया है आज भी उनके समस्याओं का सामना उसे करना पड रहा है | नोकरी व्यावसाय करने वाली नारी घर और घर के बाहरी भी समझौते में पीस रही है |

> ‘‘स्कूल में दिन भर उसका मन नहीं लगता और वह छुट्टी होने के इंतजार में खोई-खोई-सी बैठी रही | सारा दिन उसके जेहन में नन्हे-नन्हे कुलबूलाते हाथ पैर और चमकती हुई ऑखे घूमती रह ती थीं | जिनमें अभी मम्मी की पहचान भी नहीं उभरी थी | पहले दिन ज्यो ही मैथ का दूध पीने का वक्त होता वह अपने कपडे भीगे हुए पाती |’’ (६)

निष्कर्ष :

भारतीय नारी पुरुष वर्ग से द्वारा शोषित रही है | वर्तमान समय में भी समाज के दोहरे पाटो में पीस रही है | समाज में चाहे कितनी भी प्रगती क्यों न की हो लेकीन नारी के प्रति सामाजिक मानसिकता में अभी भी बदलाव नजर नहीं आता है | सुधा अरोडा जी की कहानियॉ की महानगरीय नारी लाचार, परावलंबी, विकलांग, उपेक्षित, तनावग्रस्त नजर आती है | नारी का अस्तिव खतरे में नजर आता है | सुधा जी ने महानगरीय नारी जीवन विडम्बनाओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है | नारी ने स्वतंत्रता के बाद जिस स्वतंत्रता के स्वप्न देखे थे उसके स्वप्न मोहभंग होते नजर आते है |

संदर्भ ग्रंथ

१.	अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी	-	सुधा अरोड़ा : पृष्ठ २१.
२.	१० प्रतिनिधि कहानियाँ	-	सुधा अरोड़ा : पृष्ठ क्र २९.
३.	काला शुक्रवार	-	सुधा अरोड़ा : पृष्ठ क्र. ४२.
४.	२१ श्रेष्ठ कहानियाँ	-	सुधा अरोड़ा : पृष्ठ क्र. १५९.
५.	२१ श्रेष्ठ कहानियाँ	-	सुधा अरोड़ा : पृष्ठ क्र. ३३
६.	२१ श्रेष्ठ कहानियाँ	-	सुधा अरोड़ा : पृष्ठ क्र. ३३
७.	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में चेतना के प्रवाह : माधुरी सोनटक्के.		
८.	प्रथम दशक के महिला लेखन में, स्त्री - विमर्श, : डॉ. मृदुला वर्मा.		

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.